मेराज को तीन घंटे बाद ओटी से निकाला तो परिवार सदमे में

वाराणसी | वीणा तिवारी

बीते 6-7 जून को बीएचयू आपरेशन थियेटर में बेहोशी की गैस और दवा के कथित दुष्प्रभाव से मरने वालों में एक ककरमत्ता निवासी मेराज अहमद अंसारी भी है। उसे पथरी की शिकायत पर11 दिन पहले बीएचयू में भर्ती कराया गया था। मेराज की मौत से पूरा परिवार सदमे में है। बीवी हीना केसर कहती हैं कि उस दिन तीन घंटे बाद मेराज को जब आपरेशन थियेटर से बाहर निकाला गया तो जीभ बाहर निकली हुई थी। ओटी में ही शौहर की मौत हो चुकी थी लेकिन डाक्टरों ने आईसीयू में शिफ्ट कर दिया।

सरकारी व निजी अस्पतालों को मेडिकल उपकरण सप्लाई करने वाले मेराज के घर शनिवार को यह संवाददाता पहुंची तो बीवी हीना बेसुध पड़ी थी। उसने खाना-पीना छोड़ रखा है। पिता हाजी सरफराज और मां साजदा परवीन की हालत खराब है। मेराज की दो बेटियां मिशल और माहम हैं। हीना केराकत में प्राइमरी स्कूल में टीचर हैं। गरमी की छुट्टियों में हीना बेटियों के साथ बनारस आई थीं। हीना का कहना है कि बीएचयू अस्पताल की लापरवाही से मेराज की मौत हुई है। दोषियों को सजा मिलनी चाहिए। वह अस्पताल प्रशासन के खिलाफ एफआईआर कराने की तैयारी में हैं।

रिपोर्ट की तैयारी

- भाई ने कहा कि आपरेशन में हुई लापरवाही, ओटी में ही मौत
- एक बार डाक्टरों ने कहा था कि मरीज की हालत बिगड़ रही
- बीवी हीना ने खाना छोड़ा, माता-पिता की हालत खराब, अस्पताल पर लापरवाही का आरोप

शरीर पर चीरा का निशान नहीं

ओटी से डेढ़ घंटे बाद बाहर आये एक डॉक्टर ने बताया कि मरीज की हालत बिगड़ रही है। हो सकता है कि ओपेन सर्जरी करनी पड़े। परिजनों ने कहा कि जो उचित हो करें। आरएफ अंसारी ने बताया, करीब 3.00 बजे स्ट्रेचर पर मेराज बाहर आया तो उसकी जीभ बाहर निकली थी। परिजनों को शक है कि बेहोशी की दवा देने के दौरान मेराज की मौत हो गई थी।

बीवी और दो बेटियों के साथ मेराज। (फाइल फोटो)

11 दिन पहले बीएचयू में भर्ती हुआ था ककरमत्ता का मेराज

02 बार पहले करा चुका था पथरी का आपरेशन

बाहर से मंगाई थी सारी दवा व सुई

मेराज के बड़े भाई आरएफ अंसारी ने बताया कि डॉक्टर मेराज की मौत का कारण कार्डियक और लंग इन्फेक्शन बता रहे थे जबकि मेराज की जांच रिपोर्ट देखने के बाद ऐसी कोई आशंका नहीं जताई गई थी। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन के पहले सारी दवाएं और इंजेक्शन हॉस्पिटल के बाहर की एक दवा की दुकान से मंगाया गया। डॉक्टर ने एक पर्चे पर सारी दवाएं और इंजेक्शन के नाम लिखकर दिये थे। दुकानवाले ने पर्चा रख लिया और बिना बिल बाउचर के सामान दे दिया।

उसी ओटी में मौत ने दबोचा

वाराणसी। मेराज ने शायद सोचा नहीं था कि जिस बीएचयू अस्पताल में उसे सिफारिश के बाद ऑपरेशन के लिए डेट मिली है वही उसकी मौत की तारीख बन जायेगी। मेराज सरकारी एवं निजी अस्पतालों के ओटी व आईसीयू में मेडिकल उपकरण आपूर्ति करता था। उसके ग्राहकों में बीएचयू अस्पताल भी था। परिजनों के अनुसार मेराज को इस फील्ड में 15 साल की महारथ हासिल थी। मेडिकल के हर उपकरण की जानकारी थी। यह संयोग ही था कि उसकी मौत ओटी में हुई।

2001 में भी हुआ था ऑपरेशन

मेराज का बीएचयू में 2001 में भी पथरी का ऑपरेशन हो चुका था। डॉ. यूएस द्विवेदी ने तब ऑपरेशन किया था। एक साल पहले दुबारा दर्द होने पर सिगरा में एक डॉक्टर से ऑपरेशन कराया। इधर फिर दर्द शुरू हुआ तो जांच कराई तो फिर पथरी की बात सामने आई। जिस डॉक्टर को दिखा रहा था, उसने डॉ. यूएस द्विवेदी के यहां ही ऑपरेशन कराने की सलाह दी। मेराज अपने एक दोस्त के माध्यम से डॉ. यूएस द्विवेदी से मिला और ऑपरेशन की डेट ली। भाई ने कहा कि हम तो उसे बार-बार मना कर रहे थे कि बीएचयू में ऑपरेशन न कराये।

● बीएचयू अस्पताल में तीन मरीजों की मौत का मामला

जांच कमेटी की रिपोर्ट तैयार, आज सौंपेंगे

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

बीएचयू के सर सुन्दर लाल अस्पताल में आपरेशन के बाद तीन मरीजों की मौत प्रकरण की जांच के लिए गठित गठित फैक्ट फाइंडिंग समिति ने अंतरिम रिपोर्ट तैयार कर ली है। रविवार को रिपोर्ट सौंपे जाने की उम्मीद है। शनिवार को कमेटी ने खासी मशक्कत की। ऑपरेशन में जुड़े चिकित्सकों से एक-एक कर पूछताछ हुई तो ऑपरेशन स्टाफ से दोबारा सवाल-जवाब किये गए।

कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी के निर्देश पर अस्पताल के अधीक्षक डॉ. ओपी उपाध्याय ने आठ सदस्यीय फैक्ट एण्ड फाइंडिंग कमेटी गठित की थी। उसे दो दिनों में जांच करने को कहा गया था। समयावधि शनिवार की शाम पूरी हो गयी लेकिन अभी रिपोर्ट तैयार नहीं हुई है। कमेटी के अध्यक्ष व ट्रामा सेंटर के प्रोफेसर इंचार्ज प्रो. संजीव कुमार गुप्ता की अगुवाई में टीम ने सर सुन्दर लाल के आपरेशन थियेटर के सी ब्लाक और जनरल सर्जरी ओटी से जुड़े कर्मचारियों से दूसरी बार पूछताछ की। आपरेशन में शामिल चिकित्सकों से भी गहन पूछताछ की गयी। ऐसे सवाल भी पूछे गए जिनका जवाब देते हुए चिकित्सक अचकचा गए। टीम ने पूछा कि कैसे तय होता है कि दवा सही या गलत है? इंजेक्शन व जीवर रक्षक गैस आदि के इस्तेमाल में शुचिता का कितना ध्यान रखते हैं? गैस की सप्लाई टेक्निशियन का काम है लेकिन उसकी गुणवत्ता को किस मानक पर जांचते हैं-ऐसे कई सवालों से चिकित्सक व चिकित्सालय के कर्मचारी जूझे।

टीम ने गैस सप्लाई के साथ ही उसके मानक से जुड़े तथ्यों की भी जांच की। कमेटी ने डॉ. समीर त्रिवेदी, डॉ. आरपी मीणा, डॉ. अनुराधा खन्ना, डॉ. अजय खन्ना, डॉ. यूएस द्विवेदी से पूछताछ की है। कमेटी के सदस्यों ने मरीज के रेकार्ड बुक को खंगाला।

गैस सप्लाई में बरती जाती है सावधानी

वाराणसी। बीएचयू अस्पताल के ऑपरेशन थियेटर में केन्द्रीकृत गैस सप्लाई है। प्रत्येक सिलेण्डर के साथ कम्पनी 98 प्रतिशत प्योरटी सर्टिफिकेट देती है। इलाहाबाद की गैस उत्पादक परहट कम्पनी सप्लाई करती है। यही कम्पनी केजीएमसी में भी गैस सप्लाई करती है। चिकित्सालय अधीक्षक डॉ.ओपी उपाध्याय बताया कि प्रत्येक सप्लाई के समय क्वालिटी सेल के अधिकारी भी अस्पताल आते हैं।

दवा व्यवसायी प्रधानमंत्री से करेंगे जांच की मांग

वाराणसी। दवा व्यवसायी प्रधानमंत्री से बीएचयू अस्पताल प्रकरण की जांच करने की मांग करेंगे। इसके लिए रविवार को लंका दवा व्यवसायी संघ और केमिस्ट एण्ड ड्रिगस्ट वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से प्रधानमंत्री को पत्र भेजा जायेगा। दवा व्यवसायियों ने शनिवार देर शाम बैठक में यह निणर्य लिया। यह जानकारी लंका दवा मंडी इकाई के पदाधिकारी सुभाष सोनकर ने दी।

● डॉक्टरों के सवालों से डॉक्टर ही घिरे दिखे

लंका स्थित महामना मालवीय की प्रतिमा के पास शनिवार शाम बीएचयू में मृत मरीजों को कैंडल जलाकर श्रद्धांजलि देते कांग्रेसजन।

प्रकरण की जांच को निकाला कैंडल मार्च

वाराणसी | मुख्य संवाददाता

बीएचयू में इलाज के दौरान हुई मौतों की निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर कांग्रेसजनों ने शनिवार को बीएचयू गेट से कैंडल मार्च निकाला। कांग्रेस ने इस प्रकरण की सीबीआई जांच कराने की मांग की और कहा है कि बीएचयू के सर सुंदरलाल चिकित्सालय जैसे शीर्ष चिकित्सा संस्थान में मरीजों की मौत की घटना मर्माहत करने वाली है। इस घटना ने पूरे देश में बीएचयू का मान घटाया है। लिहाजा मृतक परिजनों को बीएचयू प्रशासन मुआवजा दे और घटना की निष्पक्ष जांच करायी जाए।

कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व सांसद डा. राजेश मिश्र और पूर्व विधायक अजय राय के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता शाम छह बजे मालवीय प्रतिमा के पास जुटे। वहां से कैंडल मार्च निकाल कर विरोध प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने बीएचयू परिसर में घुसने का प्रयास किया लेकिन पुलिस ने रोक दिया। कैंडल मार्च में जिलाध्यक्ष प्रजानाथ शर्मा, शहर अध्यक्ष सीताराम केसरी, वीरेन्द्र कपूर, ओमप्रकाश ओझा, देवेन्द्र सिंह, अरविंद मिश्र, मणीन्द्र मिश्र, शैलेन्द्र सिंह, राघवेन्द्र चौबे, नागेन्द्र पाठक, अजय जायसवाल आदि मौजूद थे।

राजनीति

- मृतकों को दी श्रद्धांजलि, घटना की सीबीआई जांच की मांग
- कांग्रेसजनों को परिसर में प्रवेश को पुलिस ने रोका

कोई भी दोषी हो बख्शा नहीं जाएगा: प्रो. त्रिपाठी

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

बीएचयू के सर सुंदरलाल अस्पताल में ऑपरेशन के बाद तीन मरीजों की मौत प्रकरण में कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने कहा है कि दोषी कोई भी हो, सजा अवश्य मिलेगी। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से किसी के भी साथ अन्याय नहीं होगा।

शनिवार को मोबाइल पर बातचीत में उन्होंने कहा कि जो हालात बन रहे हैं, वह दुःखद है। किसी भी मुद्दे का राजनीतिकरण करना, एक खेल हो गया है। चंद लोग पूरे माहौल को खराब करना चाह रहे हैं। दरअसल हजारों की संख्या में प्रतिदिन मरीज अस्पताल आते हैं, उनका महामना के इस अस्पताल पर अटूट विश्वास है। उसे बचाये रखना ही हम सब का उद्देश्य है।

एक सवाल के जवाब में कुलपति ने कहा कि पारदर्शिता के लिए ही अंतरिम जांच के साथ एडीएम (प्रशासन) को भी जांच की जिम्मेदारी दी गयी है। प्रत्येक दिन सैकड़ों ऑपरेशन करने वाले हमारे चिकित्सक खुद हैरान हैं। प्रारंभिक स्तर पर गैस और बेहोशी की दवा को कारण समझा जा रहा है। संभव है कि नेचुरल डेथ भी हो।

कुलपति ने कहा कि 48 घंटे दिया गया है जांच कमेटी को रिपोर्ट तैयार करने को लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आनन-फानन में कुछ बेहतर होने से चूक हो जाए। हमारी सोच निष्पक्ष और सर्वमान्य तहकीकात की है। इसमें समय का अंतर चल सकता है।

यह पूछने पर कि एक परिजन मुआवजा मांग रहा है, थाने में तहरीर भी दी है, कुलपति ने कहा कि स्वतंत्र देश है, कोई भी अपना पक्ष रखने के लिए कदम उठा सकता है। लेकिन मुआवजा की मांग करना कितना उचित है। तहरीर दे रहे हैं, जब पोस्टमार्टम कराने को चिकित्सकों ने कहा तो परिजन तैयार नहीं हुए, अब ऐसी बात? देखिये, कुछ लोग भड़का भी रहे हैं लेकिन मेरा वादा है कि गलत नहीं होने दूंगा। दोष साबित होगा तो सजा भी मिलेगी।

इरादा साफ

- सर सुन्दर लाल अस्पताल में आपरेशन के बाद हुई मौत पर बोले कुलपति
- अस्पताल पर लोगों का भरोसा बनाये रखना हमारा उद्देश्य

प्रो. जीसी त्रिपाठी, वीसी-बीएचयू

जांच को भेजे गये दवा के दो नमूने

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

बीएचयू अस्पताल में ऑपरेशन के दौरान हुई मरीजों की मौत मामले में बेहोशी के लिए दी गई दवा की दो अलग-अलग बैच को जांच के लिए लखनऊ स्थित गर्वनमेंट एनालसिस सेंटर भेजा गया है। दो दिनों में जांच रिपोर्ट मिल जायेगी। ड्रग इंस्पेक्टर ने बीएचयू अस्पताल स्थित दवा की दुकान के बजाय लंका स्थित दवा के एक होल सेलर के यहां से आइसोफ्लोरेन की दोनों बैच का नमूना जांच के लिए भेजा है।

ड्रग इंस्पेक्टर मनोज गुप्त ने बताया कि दो अलग-अलग कंपनियों की आइसोफ्लोरेन यहां सप्लाई में हैं। इनमें एक कंपनी अहमदाबाद और दूसरी दमन की है। अहमदाबाद की कंपनी ट्राइका इसे आइसोट्वाय नाम से बनाती है जबकि दमन की कंपनी रमन एण्ड वेल आइसोफ्लो नाम से। ट्राइका वाली दवा की कीमत 340 रुपये और रमन एण्ड वेन की कीमत 356 रुपये प्रति वॉयल है। ट्राइका के बैच नंबर 122177 और रमन एण्ड वेल के बैच नंबर 16027 का नमूना लिया गया है। मनोज गुप्त के अनुसार लंका के होल सेलर के यहां से इसलिए नमूना लिया गया है क्योंकि वही बीएचयू और पूरे शहर के अस्पतालों में इसकी आपूर्ति करता है।

उन्होंने बताया कि आइसोफ्लोरेन दवा या इंजेक्शन के रूप में नहीं, इनहेलर के तौर पर बेहोशी के लिए प्रयोग की जाती है।

आईसोफ्लोरेन

- ड्रग इंस्पेक्टर ने लंका स्थित होलसेल की दुकान से लिए सैंपल
- एक अहमदाबाद और दूसरी दमन की कंपनी की है दवा

356 रुपये तक दाम हैं बेहोश करने वाली इस दवा के

एक मरीज की हालत बिगड़ी आईसीयू में हुआ शिफ्ट

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

बीएचयू अस्पताल में ऑपरेशन के बाद भर्ती एक और मरीज की हालत बिगड़ गई है। आनन-फानन में मरीज को आईसीयू में भर्ती किया गया है। इस मरीज का ऑपरेशन सात जून को हुआ था। अस्पताल प्रबंधन मरीज की जानकारी देने से इंकार कर रहा है। प्रबंधन के अनुसार उक्त मरीज को ऑपरेशन के बाद इंफेक्शन हुआ है। इसलिए तबियत गंभीर हुई है।

पिछले दिनों ऑपरेशन के बाद तीन मरीजों की मौत और आठ मरीजों की हालत बिगड़ने के मामले को तूल पकड़ता देख अस्पताल प्रबंधन अब मरीजों की पहचान छिपा रहा है। अस्पताल प्रबंधन ने इस मरीज का खर्च वहन करने की बात कही है।

खतरा बरकरार

- बीएचयू अस्पताल ने नाम बताने से किया इनकार
- सात जून को हुआ था ऑपरेशन इंफेक्शन से गंभीर होने का अंदेशा

ट्रामा सेंटर में सुविधा बढ़ाने की तैयारी

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

बीएचयू के ट्रामा सेंटर की सुविधाओं और बेहतर करने के लिए विश्वविद्यालय के उच्चाधिकारियों ने शनिवार को निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मरीजों की सुविधाएं के साथ ही जांच आदि व्यवस्था को सहज बनाने की दिशा में विचार-विमर्श किया।

सेंटर के प्रोफेसर इंचार्ज प्रो. संजीव कुमार गुप्ता ने टीम को बताया कि प्रथम तल पर ओटी के बगल में स्थित कक्ष में प्रयोगशाला स्थापित करने का प्रस्ताव है जिससे अधिकतर जांच यहीं पर होगी और रिपोर्ट भी शीघ्र मिल सकेगी। ओपीडी के बगल में ही मरीजों तथा उनके परिजनों के लिए अलग से प्रतीक्षालय बनाया जायेगा। ओपीडी के ही निकट एक दवा का काउण्टर होगा ताकि दवा की दुकान पर मरीजों की भीड़ कम हो सके।

टीम ने ट्रामा सेन्टर की आपात चिकित्सा, ओपीडी तथा ओटी का भ्रमण कर वहां उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली।

आईसीयू और ओटी भी देखा: इसके बाद टीम ने सर सुन्दर लाल चिकित्सालय के आईसीयू में भर्ती मरीजों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल की। दल ने आपरेशन थियेटर, वार्ड, पीडियाट्रिक ओटी, नाक, कान, गला की ओटी में चिकित्सकों से बात की। नेत्र रोग तथा नाक-कान, गला विभाग में मरीजों व परिजनों को बैठने के लिए अलग से स्थान बनाये जाने, प्रथम तल पर रैम्प व लिफ्ट लगाने की योजना बनाने का निर्देश दिया गया। दल में कुलसचिव डॉ. नीरज त्रिपाठी, विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. बच्चा सिंह, कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. ए वैशम्पायन, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ओपी उपाध्याय, चीफ प्राक्टर प्रो. ओएन सिंह आदि शामिल थे।

बीएचयू

- ऑपरेशन थियेटर के बगल में बनेगी जांच प्रयोगशाला
- विश्वविद्यालय के उच्चाधिकारियों ने किया निरीक्षण

'मेरे सामने ओटी से तीन लाशें निकाली गईं'

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

'ऑपरेशन के बाद आरती देवी को अचानक आईसीयू में ले जाया गया और रात 12 बजे नर्स ने उनके खत्म होने की सूचना दी। मेरी सास खुद चलकर ऑपरेशन थियेटर में गई थीं लेकिन उनकी लाश बाहर आई।' यह बात शनिवार को 'हिन्दुस्तान' से आरती देवी के दामाद अजय कुमार ने कहीं।

अजय कुमार ने बताया, हमने डॉक्टरों से पूछा था कि सबको एक ही रोग कैसे हो गया तो जवाब मिला कि कभी-कभी हो जाता है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन थियेटर से मेरे सामने ही तीन लाशें निकलीं थीं।

अजय कुमार ने कहा कि डॉक्टरों ने ऑपरेशन के बाद आरती देवी के ठीक हो जाने की बात कही थी लेकिन कैंसर की मरीज के फेफड़े में पानी भरने से मौत होने की बात समझ में नहीं आई। जब डॉक्टरों ने फेफड़े में पानी की बात बताई तो हमलोगों को शक हुआ लेकिन पांच-छह डॉक्टर, नर्स के साथ वहां कई गार्ड भी मौजूद थे और बार-बार जल्दी शव ले जाने को कह रहे थे। अस्पताल वालों ने जल्दी से कागज भी बनाकर दे दिया। आईसीयू में हमलोगों का छह हजार रुपये खर्च हुआ था।

डॉक्टरों ने कहा घबराओ मत, ठीक हो जाएंगी

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

ऑपरेशन के बाद मरीजों की मौत मामले में परिजनों ने बताया कि हालत बिगड़ने पर डॉक्टरों ने कहा कि दवा का प्रभाव है, घबराओ नहीं ठीक हो जाएंगी। जब आरती की मौत हो गई तो डॉक्टर जल्दी शव ले जाने को जोर देने लगे। इस मामले में अस्पताल प्रबंधन ने दो दिन पहले कहा था कि परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार किया था।

सबसे अहम कि अस्पताल प्रबंधन ने जिस आइसोफ्लोरेन (बेहोशी की दवा) को बाहर से खरीदे जाने की बात कही थी वह अस्पताल परिसर से ही खरीदी गई थी। आरती के परिजनों ने तहरीर के साथ उमंग फार्मेसी से दवा खरीद का परचा भी दिया है। 6 जून को 356 रुपए की यह दवा 12 फीसदी छूट के बाद 313 रुपए की खरीदी थी। इसके साथ और भी कई दवाएं थीं। बड़ा सवाल यह कि अगर आइसोफ्लोरेन में कुछ गड़बड़ी थी तो उसका अभीतक स्टाक क्यों नहीं सील कराया गया। क्यों कहा गया कि दवा बाहर लंका से खरीदी गई थी?

बीएचयू के पूर्व छात्रनेता भुवनेश्वर द्विवेदी के साथ लंका थाने पहुंचे आरती के परिजन।

परिजनों का आरोप

- बेहोशी की दवा अस्पताल परिसर से ही खरीदी गई थी
- आइसोफ्लोरेन में गड़बड़ी थी तो स्टाक क्यों नहीं सील कराया गया

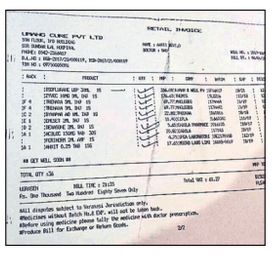

उमंग फार्मेसी से खरीदी गई दवा का पर्चा।

स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन

बड़ागांव | हिन्दुस्तान संवाद

बड़ागांव। साधोगंज बाजार स्थित जगनारायण तिवारी इंटर कालेज में शनिवार को एनडीआरएफ की टीम ने स्वास्थ शिविर का आयोजन किया है। कार्यक्रम के संयोजक डिप्टी कमांडर नरेंद्र सिंह ने बताया कि कैम्प में 625 मरीजों का परीक्षण कर दवा दी गई।

कैम्प में डॉ. अभय प्रताप, डॉ. गणेश डॉ. विकास, डॉ. मीरा रानी, ग्राम प्रधान गीता जायसवाल, कमलेश, गोपीनाथ गुप्ता, राजू मिश्रा रहे। वहीं गंगापुर में कन्या प्राथमिक विद्यालय में स्वास्थ्य कैंप का लगाया। कैंप में 256 मरीजों का परीक्षण कराया। डॉ. एसके पांडेय सर्जन, डॉ. क्षितिज तिवारी, डॉ. राहुल सिंह, डॉ. रामू सिंह, डॉ. अरविंद सिंह, डॉ. अनामिका सिंह व डॉ. रविंद्र कुशवाहा थे। अध्यक्षता सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मिसिरपुर के अधीक्षक डॉ. एमएन त्रिपाठी, प्रबंध बृजमोहन वर्मा व स्वास्थ्य केंद्र आराजी लाइंस के अधीक्षक डॉ. योगेंद्र बहादुर सिंह ने किया।

चोलापुर में खोला जायेगा ब्लड बैंक

चोलापुर। चोलापुर बाजार स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शनिवार सुबह वाराणसी के सीएमओ डॉ. वीबी सिंह व स्वास्थ्य मंत्री सिद्धनाथ सिंह के साथ अनिल सिंह अस्पताल पहुंचे। परिसर में व्यवस्थाएं ठीक देख अधीक्षक डॉ. आरबी यादव को बधाई दी। सीएमओ वाराणसी ने बताया कि यहां एक हफ्ते में ब्लड बैंक तैयार कर ली जाएगी।